يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۭ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ۭ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (94)

९४. वे तुम से बहाने बनायेंगे जब तुम उन के पास जाओगे, (हे नबी!) कह दो कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा यक़ीन नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे करतूतों से बाख़बर कर दिया है, और अल्लाह एवं उस के रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे अमल देख लेंगे फिर तुम ग़ैब और हाज़िर के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम कर रहे थे।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (95)

९५. हाँ! वह तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खायेंगे जब तुम उन के पास वापस जाओगे ताकि तुम उन को उनकी हालत पर छोड़ दो, इसलिए तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो, यक़ीनन वह बहुत नापाक हैं और उन का ठिकाना नरक है, उन के करतूतों के बदले जो किया करते थे।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (96)

९६. यह तुम्हारे क़रीब इसलिये क़सम खायेंगे कि तुम उन से ख़ुश हो जाओ तो अगर तुम उन से ख़ुश हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे फ़ासिक़ों से ख़ुश नहीं होता।[1]

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (97)

९७. देहाती लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन हुक्मों का इल्म न हो जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारे हैं, और अल्लाह बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (98)

९८. और उन देहातियों में से कुछ ऐसे हैं कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको सज़ा समझते हैं, और तुम मुसलमानों के लिये बुरे दिन के इंतेज़ार में रहते हैं, बुरा वक़्त उन पर ही पड़ने वाला है, और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

---

[1] इन तीन आयतों में उन मुनाफ़िक़ों का बयान है जो तबूक की लड़ाई के वक़्त मुसलमानों के साथ नहीं गये थे, नबी ﷺ और मुसलमानों के महफ़ूज़ वापस आने पर अपने बहाने पेश करके उनकी नज़रों में वफ़ादार बनना चाहते थे।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَٰتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَٰتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَآ إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (99)

९९. और कुछ देहातियों में ऐसे भी है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते है उसको अल्लाह की क़ुर्बत और रसूल की दुआ का जरिया बनाते हैं,[1] याद रखो कि उनका यह ख़र्च करना बेशक उन के लिए क़ुर्बत का ज़रिया है, उनको अल्लाह जरूर अपनी रहमत में दाख़िल कर देगा, अल्लाह बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَالسَّٰبِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَٰجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَٰنٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (100)

१००. और जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं, और जितने लोग बग़ैर किसी ग़र्ज़ से उन के पैरोकार हैं,[2] अल्लाह उन सभी से ख़ुश हुआ और वे सब अल्लाह से ख़ुश हुए और (अल्लाह ने) उन के लिए ऐसे बाग़ का इंतेज़ाम कर रखा है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,[3] यह बड़ी कामयाबी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَٰفِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا۟ عَلَى النِّفَاقِ

१०१. और कुछ तुम्हारे आसपास के देहातियों में से और अहले मदीना में ऐसे मुनाफ़िक़ है जो निफ़ाक़ पर अड़े हुए है, आप उन को नही

---

[1] ये अरब देहातियों की दूसरी क़िस्म है जिनको अल्लाह ने शहरी इलाक़े से दूर रहने के बावजूद अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने की ख़ुशनसीबी अता किया, और इस ईमान के सबब उन से वह गँवारपन भी दूर कर दिया जो देहाती ज़िन्दगी के सबब देहातियों में आम तौर से पाया जाता है, इसलिए वह अल्लाह की राह में ख़र्च हुए माल को सज़ा समझने के बजाय अल्लाह की क़ुर्बत और रसूल ﷺ की दुआयें लेने का ज़रिया समझते हैं।

[2] इस में तीन गुटों का बयान है, एक मोहाजिरों का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म पर मक्का और दूसरे इलाक़ों से हिजरत किया और सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये, दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे, उन्होंने हर मौक़ा पर रसूलुल्लाह ﷺ की मदद और हिफ़ाज़त की। तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरों और अंसार के अच्छे सुलूक और एहसान के साथ पैरोकार हैं, इस गुट से मुराद कुछ के नज़दीक ताबईन हैं।

[3] अल्लाह तआला उन से ख़ुश हो गया का मतलब है अल्लाह तआला ने उन के नेक अमल क़ुबूल कर लिये, उन के इंसान होने के सबब जो ग़ल्तियाँ हुई माफ़ कर दिया और वह उन पर नाराज़ नहीं।

لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿101﴾

जानते[1] उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरी सजा देंगे, फिर वे बहुत बड़े अजाब की तरफ़ भेजे जायेंगे।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿102﴾

१०२. और कुछ दूसरे लोग हैं जो अपनी ग़लतियों को क़ुबूल करते हैं, जिन्होंने मिले हुए अमल किये थे, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। अल्लाह से उम्मीद है कि उन की तौबा क़ुबूल करे, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿103﴾

१०३. आप उनके मालों में से सदक़ा ले लीजिये, जिसके जरिये आप उनको पाक और साफ़ कर दें और उन के लिए दुआ कीजिए, बेशक आप की दुआ उन के लिए इत्मिनान का ज़रिया है और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह सुनता है, अच्छी तरह जानता है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿104﴾

१०४. क्या उनको यह इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और वही सदक़ा को क़ुबूल करता है,[2] और यह कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने में और रहम करने में कामिल है।

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿105﴾

१०५. और कह दीजिए कि तुम अमल किये जाओ तुम्हारे अमल अल्लाह ख़ुद देख लेगा और उसका रसूल और ईमानवाले (भी देख लेंगे) और जरूर तुम को ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी और खुली बातों का जानने वाला है, इसलिए वह तुम को तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।

---

[1] कितने साफ़ लफ़्ज़ों में नबी ﷺ के ग़ैब न जानने का खण्डन (तरदीद) है, काश अहले बिदअत (धर्म में नई चीजें करने वाले) को क़ुरआन समझने की सआदत हासिल हो।

[2] सदक़ा क़ुबूल करता है का मतलब (अगर वह जायेज कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है, जिस तरह हदीस में आया है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला तुम्हारे सदक़ा की इस तरह पालन-पोषण करता है जिस तरह तुम में से कोई इंसान अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहां तक कि एक खजूर के बराबर सदक़ा (बढ़-बढ़कर) ओहुद पहाड़ के बराबर हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज ज़कात और मुस्लिम, किताबुज ज़कात)

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿106﴾

१०६. और कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक स्थगित (मुलतवी) है,[1] या तो उन को सजा देगा या उनकी तौबा (पश्चाताप) क़ुबूल कर लेगा, और अल्लाह बहुत जानने वाला है, बहुत हिक्मत वाला है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿107﴾

१०७. और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इस मक़सद से मस्जिद बनायी है कि नुक़सान पहुँचायें और कुफ़्र की बातें करें, और ईमानवालों में फूट डालें और उस इंसान के ठहरने का इंतेजाम करें जो इस के पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुख़ालिफ़ है, और क़सम खा जायेंगे कि सिर्फ़ भलाई के अलावा हमारा कोई मक़सद नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे पूरी तरह से झूठे हैं।

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿108﴾

१०८. आप उस में कभी खड़े न हों,[2] लेकिन जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से ही तक़वा पर रखी गयी हो, वह इस लायक़ है कि आप उस में खड़े हों[3] इस में ऐसे लोग हैं कि वे ज़्यादा पाक होने को अच्छा समझते हैं और

---

[1] तबूक की लड़ाई में पीछे रह जाने वालों में एक तो मुनाफ़िक़ लोग थे, दूसरे वे जो बिला किसी वजह के ही पीछे रह गये थे, और उन्होंने अपनी ग़लती को क़ुबूल कर लिया था, लेकिन उन्हें माफ़ नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का बयान है जिनका मामला स्थगित (मुलतवी) कर दिया था, यह तीन लोग थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

[2] यानी आप ﷺ ने वहाँ जाकर जो नमाज पढ़ने का वादा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें, अत: आप ﷺ ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी और उसे ख़त्म कर डाला, इससे आलिमों ने नतीजा निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के बीच इख़्तिलाफ़ पैदा करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद ज़रार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद और बिखराव न पैदा हो।

[3] इस से मुराद कौन-सी मस्जिद है ? इस में इख़्तिलाफ़ है, कुछ ने मस्जिदे "क़ुबा" और कुछ ने मस्जिदे नबवी ﷺ को कहा है, सलफ़ का एक गुट दोनों के हक़ में रहा है।

[4] हदीस में आता है कि इस से मुराद अहले क़ुबा हैं, नबी ﷺ ने उन से पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पाकीज़गी की तारीफ़ की है, तुम क्या करते हो? उन्होंने कहा कि हम ढेले इस्तेमाल करने के साथ-साथ पानी भी इस्तेमाल करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का सुबूत है कि ऐसी पुरानी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना बेहतर है, जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के ग़र्ज़ से बनाई गयी हो, इसके सिवाय नेकों के ऐसे गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ना बेहतर है जो पूरा वज़ू करने और पाकीज़गी और सफ़ाई का ठीक तरह से

अल्लाह तआला ज़्यादा पाक रहने वालों को प्यारा रखता है।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿109﴾

१०९. फिर क्या ऐसा इंसान बेहतर है जिस ने अपने घर की बुनियाद अल्लाह से डरने पर और अल्लाह की ख़ुशी पर रखी हो या वह इंसान कि जिस ने अपने घर की बुनियाद किसी घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े? और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को समझ ही नहीं देता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿110﴾

११०. उनका यह घर जिसे उन्होंने बनाया है, सदा उन के दिलों में शक की बिना पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, लेकिन यह कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और अल्लाह इल्म वाला और हिक्मत वाला है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿111﴾

१११. बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानों और मालों को जन्नत के बदले ख़रीद लिया है, वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं जिस में क़त्ल करते और क़त्ल होते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात और इंजील और क़ुरआन में। और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे का पालन कौन कर सकता है? इसलिए तुम अपने इस बेचने पर जो कर लिये हो ख़ुश हो जाओ, और यह बड़ी कामयाबी है।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿112﴾

११२. वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (अल्लाह की) हम्द करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (या सच्चे रास्ते पर सफ़र करने वाले) रुकुअ और सज्दा करने वाले अच्छी बातों की नसीहत देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह के क़ानूनों को ध्यान में रखने वाले हैं, और ऐसे ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।[1]

एहतेमाम करने वाले हों।

[1] मतलब यह है कि पूरा ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की नसीहतों की

११३. पैग़म्बर और दूसरे मुसलमानों को इजाज़त नही कि मूर्तिपूजकों के लिए माफी की दुआ करें, अगरचे वे रिश्तेदार ही हों, इस हुक्म के वाज़ेह होने के बाद कि ये लोग नरक में जायेंगे।[1]

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿113﴾

११४. और इब्राहीम का अपने बाप के लिए माफ़ी की दुआ करना वह सिर्फ़ वादे का सबब था जो उन्होंने उसे दिया था, फिर जब उन पर यह बात वाज़ेह हो गयी कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो वह उस से बरी (बेज़ार) हो गये,[2] हक़ीक़त में इब्राहीम बड़े नर्म सहन करने वाले थे।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿114﴾

११५. और अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद भटका दे जब तक उन बातों को साफ-साफ न बता दे जिन से वे बचें, बेशक अल्लाह हर चीज को अच्छी तरह जानता है।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿115﴾

११६. बेशक अल्लाह ही का मुल्क है आकाशों और धरती में, वही जिलाता और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवाय न कोई दोस्त है न कोई मदद करने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿116﴾

११७. अल्लाह (तआला) ने पैग़म्बर की हालत पर ध्यान दिया और मोहाजिरों व अंसार की

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ

ख़ूबसूरत मिसाल हों और उन चीजों से बचने वाला हो जिन से अल्लाह ने रोक दिया है और अल्लाह के हुक्मों की नाफ़रमानी करने वाला नहीं बल्कि उनका मुहाफ़िज़ हो, ऐसे ही पूरे ईमानवाले ख़ुशख़बरी के हक़दार हैं।

[1] इसकी तफ़सीर सहीह बुख़ारी में तफ़सील से मौजूद है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़सीर, सूर: तौबा)

[2] हज़रत इब्राहीम पर भी जब यह बात वाज़ेह हुई कि मेरा बाप अल्लाह का दुश्मन है और नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया और उसके बाद माफ़ी की दुआ नहीं की।

يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

हालत पर भी, जिन्होंने ऐसी तंगी के वक़्त पैग़म्बर का साथ दिया,[1] उसके बाद कि उन में से एक गुट के दिल डाँवाडोल होने लगे थे फिर अल्लाह ने उनकी हालत पर रहम किया, बेशक अल्लाह उन सब पर बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

११८. और तीन इंसानों की हालत पर भी जिनका मामला स्थगित (मुलतवी) कर दिया गया था[2] यहाँ तक कि जब धरती अपने फैलाव के बावजूद भी उन के लिए तंग होने लगी और वे ख़ुद अपने वजूद से तंग आ गये, और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं पनाह नही मिल सकती सिवाय इस के कि उसकी तरफ़ पलटा जाये, फिर उनकी हालत पर रहम किया

---

[1] तबूक की लड़ाई के सफ़र को कठिनाई (कष्ट) का वक़्त कहा गया है, इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का वक़्त था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे सफ़र लम्बा था और चौथे साधन (वसायेल) की कमी थी, इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई का सफ़र या सेना) कहा जाता है।

[2] خُلِّفوا का वही मतलब है जो مُرجَون का है, यानी जिनका मामला मुअख़्ख़र कर दिया गया था और पचास दिन के बाद उनकी तौबा क़ुबूल हुई। यह तीन सहाबा थे, काअब बिन मालिक, मुरार: बिन रबीअ और हिलाल बिन उमैय्या, यह पक्के मुसलमान थे, इससे पहले हर जिहाद में शामिल होते रहे, इस तबूक के जिहाद में सुस्ती के सबब शामिल नहीं हो सके, बाद में उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ, सोचा एक ग़लती (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है लेकिन मुनाफ़िकों की तरह अब रसूलुल्लाह ﷺ के सामने झूठी दलील न पेश करेंगे, इसलिए हाज़िर होकर अपनी ग़लती को वाज़ेह तौर से क़ुबूल कर लिया और उसकी सज़ा के लिये अपने आप को पेश कर दिया। नबी ﷺ ने उन के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके बारे में कोई हुक्म उतारेगा, फिर भी उस अवधि (मुद्दत) में आप ﷺ सहाबा केराम को इन तीनों से नाता रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया और चालीस रातों के बाद उन्हें हुक्म दिया गया कि वह अपनी बीवियों से भी दूर रहें, अत: बीवियों से भी जुदाई हो गई और दस दिन गुज़रने के बाद तौबा क़ुबूल कर ली गयी और बयान की गई आयत उतरी। इस वाक़ेआ की तफ़सीली जानकारी हज़रत काअब बिन मालिक के कौल के ऐतबार से हदीस में मौजूद है। देखिये (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़व: तबूक, मुस्लिम, किताबुत तौब:, बाब हदीस तौबते काअब बिन मालिक)

ताकि वे मुस्तक़बिल में भी तौबा कर सकें, बेशक अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿119﴾

११९. ऐ ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सच्चों के साथ रहो।[1]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَــــُٔـوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿120﴾

१२०. मदीना और उस के आसपास के गाँव वालों के लिए ठीक न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें और न यह कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें, यह इस सबब से कि उनको अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए ग़ुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सब पर उन के नाम (एक-एक) नेक काम लिखा गया, बेशक अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं करता।

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿121﴾

१२१. और जो भी छोटा और बड़ा उन्होंने ख़र्च किया और जितने मैदान उन को पार करने पड़े, यह सब भी उन के नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उन के कामों का अच्छे से अच्छा बदला अता करे।

[1] सच्चाई के सबब ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की ग़ल्तियों को न केवल माफ़ ही किया बल्कि उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم و رضوا عنه। इसलिये ईमानवालों को हुक्म दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो, इसका मतलब यह है कि जिस के दिल के अन्दर तक़वा (यानी अल्लाह का डर) होगा वह सच्चा होगा और जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक़वा से ख़ाली है, इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ दूसरी ग़ल्तियाँ तो हो सकती हैं लेकिन वह झूठा नहीं हो सकता।

१२२. और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उन के हर बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे दीन को समझ-बूझकर हासिल करे और ताकि यह लोग अपनी क़ौम को जबकि वह उन के पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें।	وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿122﴾
१२३. ऐ ईमानवालो! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं, और उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिए और यह यक़ीन करो कि अल्लाह तआला तक़्वा (संयम) वालों के साथ है।	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿123﴾
१२४. और जब कोई सूर: उतारी जाती है तो कुछ (मुनाफ़िक़) कहते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है[1] तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूर: ने उन के ईमान में इज़ाफ़ा किया है और वे ख़ुश हो रहे हैं।	وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿124﴾
१२५. और जिनके दिलों में रोग है, इस सूर: ने उन में उनकी गंदगी के साथ और गंदगी बढ़ा दी है और वे कुफ़्र की हालत ही में मर गये।[2]	وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿125﴾
१२६. और क्या उनको नही दिखायी देता कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार किसी न किसी मुसीबत में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं न नसीहत हासिल करते हैं।	أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿126﴾

[1] इस सूर: में मुनाफ़िक़ों के जिन अमलों का पर्दा उठाया गया है, ये आयतें उनका बाक़ी और पूरक (तकमिला) हैं, इस में बताया जा रहा है कि जब उनकी ग़ैर मौजूदगी में कोई सूर: या उसका कोई हिस्सा उतरता और उनके इल्म में बात आती तो वे हँसी और मज़ाक़ के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इस से तुम में से किस के ईमान में ज़्यादती हुई।

[2] रोग से मुराद निफ़ाक़ और अल्लाह की आयतों के बारे में शक़ो शुब्हा है, फ़रमाया: "परन्तु यह सूर: मुनाफ़िक़ों को उन के निफ़ाक़ और फ़िस्क़ में अधिकता करती है और वह अपने कुफ़्र और शिर्क में इस तरह मज़बूत हो जाते हैं कि उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती और कुफ़्र (अधर्म) पर ही उनका ख़ातिमा होता है।"

وَإِذَا مَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَىٰكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ ٱنصَرَفُوا۟ ۚ صَرَفَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿127﴾

१२७. और जब कोई सूर: उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुम को कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस सबब से कि वे नासमझ लोग हैं।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿128﴾

१२८. तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर (ईशदूत) की आमद हुई है जो तुम्हारी ही जाति से हैं[1] जिन को तुम्हारे नुक़सान की बातें बहुत भारी लगती हैं, जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक (ख्वाहिशमंद) रहते हैं, ईमानवालों के लिए बहुत ही शफ़ीक़ मेहरबान हैं।

فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُلْ حَسْبِىَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴿129﴾

१२९. फिर अगर वे मुख मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, मैंने उसी पर भरोसा किया और वह बहुत बड़े अर्श (सिंहासन) का मालिक (स्वामी) है।[2]

سُورَةُ يُونُسَ

सूरतु यूनुस-१०

सूर: यूनुस मक्के में उतरी और इसकी एक सौ नौ आयतें हैं और ग्यारह रूकूअ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓر ۚ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْحَكِيمِ ﴿1﴾

१. अलिफ़. लाम. रा. । यह हिक्मत भरी किताब की आयतें हैं।

---

[1] सूर: के आख़िर में मुसलमानों पर नबी ﷺ की शक्ल में जो बड़ा एहसान किया गया है उसका ज़िक्र किया जा रहा है, आप ﷺ की पहली फ़ज़ीलत यह बयान की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से हैं यानी मर्द की शक्ल में हैं (वह नूर या दूसरा कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था (ख़राब अक़ीदा) के शिकार लोग जनता को इस तरह के गोरख धन्धे में फंसाते हैं।

[2] हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि जो इंसान यह आयत حسبي الله सुबह और शाम सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी परेशानियों (परेशानी और कठिनाई) के लिए काफ़ी हो जायेगा। (सुनन अबू दाऊद नं॰ ५०८१)

२. क्या उन लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हम ने उन में से एक इंसान के पास वह्यी (प्रकाशना) भेज दी कि सभी इंसानों को डराईये और जो ईमान ले आये उनको यह ख़ुशख़बरी सुना दीजिए कि उनके रब के पास उनको पूरा बदला और इज़्ज़त मिलेगी, काफ़िरों ने कहा कि यह इंसान बेशक साफ़ जादूगर (तांत्रिक) है।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ ٱلنَّاسَ وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ ٱلْكَٰفِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

३. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने छः दिनों में आकाशों और धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर क़ायम हुआ, वह हर काम का इन्तिज़ाम करता है,[1] उसकी इजाज़त के बिना उस के पास कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं, ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नसीहत हासिल नहीं करते?

إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ إِذْنِهِۦ ۚ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

४. तुम सब को अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये, इंसाफ़ के साथ बदला दे और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा और दुखदायी अज़ाब होगा उन के कुफ़्र के सबब।[2]

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُۥ يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ لِيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ بِٱلْقِسْطِ ۚ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

५. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चाँद को रौशन बनाया, और उसके लिए स्थान (गंतव्य) मुक़र्रर किये ताकि तुम सालों का हिसाब कर सको और हिसाब को जान लो, अल्लाह तआला ने ये सभी चीज़ें बेकार नहीं पैदा कीं, वह यह सुबूत उन्हें साफ़ बता रहा है जो अक़्ल रखते हैं।

هُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ ٱلشَّمْسَ ضِيَآءً وَٱلْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُۥ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا۟ عَدَدَ ٱلسِّنِينَ وَٱلْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ ٱللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِٱلْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

---

[1] यानी आकाश और धरती को पैदा कर के उस ने उसे यूँ ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी मख़लूक़ का नज़्म और तदबीर इस तरह कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, हर चीज़ उस के हुक्म के ऐतबार से अपने-अपने काम में मसरूफ़ है।

[2] इस आयत में क़यामत के आने, अल्लाह के सामने सभी के जमा होने, बदले और सज़ा का बयान है, यह विषय क़ुरआन करीम में कई अंदाज़ से कई मक़ाम पर बयान हुआ है।

६. बेशक रात-दिन के एक-दूसरे के बाद आने में और अल्लाह तआला ने आकाश और धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है, उन सब में उन लोगों के लिए सुबूत हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं।

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ⑥

७. जिन लोगों को हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है, और वह दुनियावी ज़िन्दगी पर ख़ुश हो गये हैं और उस में जी लगा बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُونَ ⑦

८. ऐसे लोगों का ठिकाना (स्थान) उनके अमलों के सबब नरक है।

أُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑧

९. बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, उनका रब उनको ईमान वाले होने के सबब (उन के मक़सद तक) पहुँचा देगा,[1] सुख के बाग़ों में जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी।

إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ⑨

१०. वहाँ उन के मुँह से यह बात निकलेगी 'सुब्हानल्लाह'[2] और उनका आपसी सलाम (अभिवादन) यह होगा 'अस्सलामु अलैकुम' और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

دَعْوٰىهُمْ فِيهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ⑩

---

[1] इसका एक दूसरा तर्जुमा यह किया गया है कि दुनिया में ईमान के सबब क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन के लिये पुल सिरात से गुज़रना आसान कर देगा, कुछ के नज़दीक यह अल्लाह तआला से मदद हासिल करने के लिये है और तर्जुमा यह होगा कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन उन के लिये एक आसमानी नूर मुहय्या करेगा, जिसकी रौशनी में वे चलेंगे जैसा कि सूर: हदीद में इसका बयान आता है।

[2] यानी जन्नत में जाने वाले हर पल अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ में लगे होंगे, जिस तरह हदीस में आता है : "अहले जन्नत के मुँह से अल्लाह की बड़ाई और तारीफ़ इस तरह निकलेगी जिस तरह साँस निकलती है।"

११. और अगर अल्लाह लोगों को फ़ौरन नुक़सान पहुँचा देता, जैसे लोग फ़ौरन फ़ायेदा चाहते हैं इसलिए उन का वादा कभी का पूरा हो चुका होता तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है उन के हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُم بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿11﴾

१२. और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हम को पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसकी तक़लीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उस ने अपनी तक़लीफ़ के लिए जो उसे पहुँची थी कभी हमें पुकारा ही नहीं था।[1] इन हुदूद तोड़ने वालों के अमल को उन के लिए उसी तरह पसन्दीदा होने वाला बना दिया गया है।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿12﴾

१३. और हम ने तुम से पहले बहुत से ऐसे गिरोहों को बरबाद कर दिया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया, अगरचे उन के पास उन के पैग़म्बर भी निशानियाँ लेकर आये और वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते? हम अपराधी लोगों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿13﴾

१४. फिर उन के बाद हम ने दुनिया में उनकी जगह पर तुम को बसाया, ताकि हम देख लें कि तुम कैसे काम करते हो।

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ لِنَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿14﴾

---

[1] यह इंसान की उस हालत का बयान है जो उस के बहुमत की करनी है, बल्कि बहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस सुस्ती का काम आम तौर से करते हैं कि दुख के वक़्त बहुत अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, दुआयें की जा रही हैं, तौबा और इस्तिग़फ़ार किया जा रहा है, लेकिन जब अल्लाह तआला दुख का वह कठिन वक़्त निकाल देता है तो फिर अल्लाह के दरबार में आजिज़ी और दुआ से भी अन्जान हो जाते हैं और अल्लाह ने उनकी दुआओं को क़ुबूल करके जिस कठिनाईयों से आज़ादी दिलायी उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करने की भी ख़ुशनसीबी उनको नहीं होती।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿15﴾

१५. और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिल्कुल साफ़ हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का यक़ीन नहीं है, इस तरह कहते हैं कि इस के सिवाय दूसरा क़ुरआन लाईये, या इस में कुछ तब्दीली कर दीजिए, आप (ﷺ) यह कह दीजिए कि मुझे यह हक़ नहीं कि अपनी तरफ़ से उस में तब्दीली कर दूं, बस मैं तो उसी की इत्तेबा करूंगा जो मेरे पास वह्यी के ज़रिये मेरे पास आयी है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब का डर रखता हूं।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿16﴾

१६. आप कह दीजिए कि अगर अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुम को वह पढ़कर सुनाता और न अल्लाह (तआला) तुम को उसकी ख़बर देता, क्योंकि इस से पहले तो मैं एक लम्बी उम्र तक तुम में रह चुका हूं, फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿17﴾

१७. तो उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बुहतान बांधे या उसकी आयतों को झूठ कहे, बेशक ऐसे मुजरिम कभी कामयाब नहीं होंगे।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰۤؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿18﴾

१८. और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुक़सान पहुंचा सकें और न उनको फ़ायेदा पहुंचा सकें, और कहते हैं कि ये अल्लाह के सामने हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे उमूर की ख़बर देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में और न धरती में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से।

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ

१९. और सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ पैदा किये[1] और

[1] यानी यह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है, और पहले इसका कोई वजूद नहीं

وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيۡنَهُمۡ فِيمَا فِيهِ يَخۡتَلِفُونَ (19)

अगर एक बात न होती जो आप के रब की तरफ़ से मुक़र्रर की जा चुकी है, तो जिस चीज में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका पूरी तरह से फ़ैसला हो चुका होता।

وَيَقُولُونَ لَوۡلَآ أُنزِلَ عَلَيۡهِ ءَايَةٌ مِّن رَّبِّهِۦۖ فَقُلۡ إِنَّمَا ٱلۡغَيۡبُ لِلَّهِ فَٱنتَظِرُوٓاْ إِنِّي مَعَكُم مِّنَ ٱلۡمُنتَظِرِينَ (20)

२०. और ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतरा?[1] (तो आप) कह दीजिए कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, तो तुम भी इंतेज़ार में रहो मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार में हूँ।

وَإِذَآ أَذَقۡنَا ٱلنَّاسَ رَحۡمَةً مِّنۢ بَعۡدِ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُمۡ إِذَا لَهُم مَّكۡرٌ فِيٓ ءَايَاتِنَاۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسۡرَعُ مَكۡرًاۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكۡتُبُونَ مَا تَمۡكُرُونَ (21)

२१. और जब हम लोगों को दुख पहुँचने के बाद सुख का मज़ा चखाते हैं,[2] तो वह तुरंत हमारी आयतों के बारे में मकर करने लगते हैं। आप कह दीजिए कि अल्लाह तदबीर में तुम से अधिक तेज़ है, बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं।

هُوَ ٱلَّذِي يُسَيِّرُكُمۡ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمۡ فِي ٱلۡفُلۡكِ وَجَرَيۡنَ بِهِم بِرِيحٖ طَيِّبَةٖ

२२. वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल और थल में सफ़र कराता है,[3] यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, और वे नवकाएं लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये लेकर चलती है और वे लोग उन से ख़ुश होते हैं, उन पर एक

था, सभी लोग एक ही दीन और एक ही रास्ते पर थे जो इस्लाम है, जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद) को ख़ास मकाम हासिल है। हज़रत नूह तक लोग इसी रास्ते तौहीद पर चलते रहे, फिर उन में इख़्तिलाफ़ हो गया और कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ दूसरे को भी देवता, माबूद और कष्टनिवारक (मुश्किल कुशा) समझना शुरू कर दिया।

[1] इस से मुराद कोई बड़ा और खुला मोजिज़ा है, जैसे समूद की क़ौम के लिये ऊँटनी का ज़ाहिर होना, उन के लिये सफ़ा पहाड़ को सोने का या मक्के के पहाड़ों को ख़त्म कर के उनकी जगह पर नहरें और बाग़ बनाने का या दूसरे इस तरह का कोई मोजिज़ा ज़ाहिर करके दिखाया जाये।

[2] दुख के बाद सुख का मतलब है ग़रीबी, सूखा और दुख और मुसीबत के बाद सुख का मतलब क़ीमती जिन्दगी के लिए वसायेल की अधिकता आदि।

[3] يسيركم वह तुम्हें चलाता या चलने-फिरने की क़ूवत अता करता है। "थल में" यानी उस ने तुम्हें पैर दिया जिन से तुम चलते हो, सवारियाँ मुहय्या की, जिन पर सवार होकर दूर जगह का सफ़र करते हो। और "जल में" यानी अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाएं और जहाज़ बनाने का गुण (सिफ़त) और समझ अता किया, तुम ने उन्हें बनाया और उन के ज़रिये समुन्दर में दूर तक सफ़र करते हो।

وَفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (22)

तूफ़ानी हवा का झोंका आता है और हर तरफ़ से लहरें उठती हैं और वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, (उस वक़्त) सभी शुद्ध विश्वास (ख़ालिस ईमान) और अक़ीदा के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं कि अगर तू इस से बचा ले तो हम ज़रूर (तेरे) शुक्रगुज़ार बन जायेंगे।

فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (23)

२३. फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में नाहक़ फ़साद करने लगते हैं। हे लोगो! यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है, दुनियावी ज़िन्दगी के (कुछ) फ़ायदे हैं, फिर तुम को हमारे पास आना है, फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۗ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (24)

२४. दुनियावी ज़िन्दगी की हालत ऐसी है, जैसे हम ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको इंसान और जानवर खाते हैं, ख़ूब हरी-भरी होकर निकली, यहाँ तक कि जब वह धरती अपनी ज़ीनत का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसका ख़ूब सौन्दर्य हो गया और उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूरे तौर से हक़दार हो चुके तो दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ़ से कोई हुक्म (दुर्घटना) आ गया, तो हम ने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि जैसे कल यहाँ थी ही नहीं, हम इसी तरह निशानियों को मुफ़स्सल बयान करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۗ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (25)

२५. और अल्लाह (तआला) सलामती के घर की तरफ़ तुम को बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۗ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (26)

२६. जिन लोगों ने नेक काम किया है उनके लिए भलाई है, और कुछ ज़्यादा भी और उनके मुँह पर न स्याही छायेगी और न अपमान (ज़िल्लत), ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उस में हमेशा रहेंगे।

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿27﴾

२७. और जिन लोगों ने बुरे अमल किये उनको बुराई की सजा समान मिलेगी[1] और उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (तआला) से कोई बचा न पायेगा, जैसे कि उन के मुँह पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं, ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उस में हमेशा रहेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿28﴾

२८. और वह दिन भी याद के क़ाबिल है, जिस दिन हम उन सभी को जमा करेंगे, फिर मूर्ति-पूजकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे साझीदार अपनी जगह पर ठहरो, फिर हम उन में आपस में फूट डाल देंगे, और उन के वे साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿29﴾

२९. तो हमारे तुम्हारे बीच अल्लाह काफी है गवाह के रूप में कि हम को तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।

هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَا أَسْلَفَتْ ۚ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿30﴾

३०. उस जगह पर हर इंसान अपने पहले किये गये कामों की जाँच कर लेगा, और ये लोग अल्लाह की तरफ़ जो उनका हक़ीक़ी मालिक है, लौटाये जायेंगे और जो कुछ झूठ (ईष्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿31﴾

३१. आप कहिए कि वह कौन है, जो तुम को आकाश और धरती से रिज़्क़ पहुँचाता है या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा हक़ रखता है, और वह कौन है जो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो सभी कामों का संचालन (नज़म) करता है? बेशक वह यही कहेंगे कि अल्लाह,[2] तो उन से कहिए कि फिर

---

[1] पहले की आयत में जन्नत में रहने वाले लोगों का बयान था, उस में बताया गया था कि उन्हें इन नेक कामों का बदला कई-कई गुना मिलेगा और फिर इस से ज़्यादा अल्लाह के दीदार से सम्मानित (बाइज़्ज़त) होंगे। इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा। سيئات का मतलब कुफ्र (अधर्म) और शिर्क और दूसरी बुराईयाँ हैं।

[2] इस आयत से भी वाज़ेह होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह को मालिक, ख़ालिक़, रब और उसको हर काम का हल करने वाला क़ुबूल करते थे, लेकिन उसके बावजूद चूँकि वह उसकी इबादत

डरते क्यों नहीं?

फ़ज़ालिकुम...

३२. तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सच्चा रब है, फिर सच के बाद दूसरा क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो?[1]

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ (32)

३३. इसी तरह आप के रब की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी फ़ासिक़ लोगों के बारे में साबित हो चुकी है।[2]

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (33)

३४. आप (इस तरह) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी पैदा करे फिर दोबारा पैदा करे? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۭ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (34)

३५. आप कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सच का रास्ता बताता हो? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही सच का रास्ता बताता है, तो फिर जो ताक़त सब बात का रास्ता बतलाती हो, वह ज़्यादा इत्तेबा और पैरवी के लायक़ है, या वह इंसान जिसको बिना बताये ख़ुद ही रास्ता न दिखायी दे तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ۭ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ۭ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (35)

में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का ईंधन बताया, आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी इबादत-एकेश्वरवाद (तौहीद) के इंकार करने वाले हैं।

[1] यानी रब और माबूद तो यही है जिसके बारे में तुम्हें ख़ुद क़ुबूल है कि हर चीज़ का ख़ालिक़, मालिक और संयोजक (निगराँ) वही है, फिर इस इबादत के लायक़ को छोड़कर जो तुम दूसरों को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के सिवाय क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नही आती? तुम कहाँ फिरे जाते हो?

[2] यानी जिस तरह मूर्तिपूजक सारी बातों को क़ुबूल कर लेने के बावजूद अपनी मूर्तिपूजा पर क़ायम हैं और उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं, इसी तरह तेरे रब की यह बात साबित हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं।

३६. और उन में से ज़्यादातर लोग बेबुनियाद (अनुमानित) ख़्यालों पर चल रहे हैं, बेशक बेअसल (अनुमानित) ख़्याल सच (की पहचान) में ज़रा भी काम नहीं दे सकता ये जो कुछ कर रहे हैं, बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿36﴾

३७. और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की वह्यी) के सिवाय (ख़ुद ही) गढ़ लिया गया हो, बल्कि यह तो (उन किताबों की) तसदीक़ करने वाली है, जो इस के पहले (उतर) चुकी है, और किताब (ज़रूरी अहकाम) का तफ़सीली बयान है, इस में कोई बात शक की नहीं कि सारे जहाँ के रब की तरफ़ से है।

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿37﴾

३८. क्या यह लोग इस तरह कहते हैं कि आप ने उसको गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इसकी तरह एक ही सूरः लाओ और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन को बुला सको उनको बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿38﴾

३९. बल्कि वे ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसको अपने इल्म के दायरे में नहीं लाये और अभी उनको इसका आख़िरी नतीजा नहीं मिला, जो लोग उन से पहले हुए हैं उसी तरह उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ?[1]

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿39﴾

४०. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे और कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे, और आप का रब फ़साद करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿40﴾

[1] ये उन काफ़िरों और मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर होशियार किया जा रहा है कि तुम से पहले की क़ौमों ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया, तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ? अगर तुम इसे झुठलाने से न रुके तो तुम्हारा भी अंजाम इस से अलग न होगा।

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ (41)

४१. और अगर वे आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझ को मिलेगा और तुम्हारा किया हुआ तुम को मिलेगा, तुम मेरे किये हुए के जिम्मेदार नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का जिम्मेदार नहीं हूं।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ (42)

४२. और उन में कुछ ऐसे हैं जो आप की तरफ़ कान लगा कर सुनते हैं, क्या आप बहरों को सुनाते हैं चाहे उनको अक़्ल भी न हो?

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ (43)

४३. और उन में कुछ ऐसे हैं कि आप को देख रहे हैं, फिर क्या आप अंधों को रास्ता दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी आँख भी न हो?

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ (44)

४४. यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह लोगों पर जरा भी ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग ख़ुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ (45)

४५. और उन को वह दिन याद दिलाइए जिस में अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस हालत में जमा करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (दुनिया में) सारे दिन का एक आध पल रहे हों [1] और आपस में एक-दूसरे को पहचानने को खड़े हों[2] हक़ीक़त में नुक़सान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया और वे हिदायत पाने वाले नहीं थे।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ (46)

४६. और हम जिसका उन से वादा कर रहे हैं उस में से कुछ जरा सा आप को दिखला दें या (उनके जाहिर होने से पहले) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है, फिर

---

[1] यानी क़यामत की कठिनाईयाँ देखकर दुनिया के सारे मजे भूल जायेंगे और दुनिया की जिन्दगी उन्हें ऐसी महसूस होगी कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध पल ही रहे हैं।

[2] क़यामत में कई हालतें होंगी, जिन्हें क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है, एक वक़्त ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ मौक़े ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का इल्जाम देंगे।

अल्लाह उन के सभी अमलों का गवाह है।[1]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿47﴾

४७. और हर उम्मत के लिए एक रसूल (संदेश-वाहक) है, फिर जब उनका रसूल आ चुकता है उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ किया जाता है,[2] और उस पर ज़ुल्म नहीं किया जाता।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿48﴾

४८. और यह लोग कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो ?

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿49﴾

४९. आप कह दीजिए कि मैं ख़ुद अपने लिए तो किसी फ़ायदे और किसी नुक़सान का हक़ रखता ही नहीं लेकिन जितना अल्लाह की मर्ज़ी हो, हर उम्मत के लिए एक मुक़र्रर वक़्त है, जब उनका वह मुक़र्रर वक़्त आ पहुँचता है तो एक पल न पीछे हट सकते हैं और न आगे खिसक सकते हैं।[3]

---

[1] इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हम उन काफ़िरों के बारे में जो वादा कर रहे हैं अगर उन्होंने कुफ़्र (अधर्म) और मूर्तिपूजा को जारी रखा तो उन पर भी उसी तरह अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, जिस तरह से पहले की क़ौमों पर आया, इनमें से कुछ अगर आप के जीवन में भेज दें तो यह भी मुमकिन है, जिस से आप की आँखे ठंडी होंगी, लेकिन अगर आप इस से पहले ही दुनिया से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन काफ़िरों को आख़िर में हमारे पास ही आना है, इन के सारे अमलों और हाल की हमें ख़बर है वहाँ ये हमारे अज़ाबों से किस तरह बच सकेंगे? यानी दुनिया में मुमकिन है कि हमारे ख़ास राज़ के सबब अज़ाब से बच जायें, लेकिन आख़िरत में तो उनके लिये हमारे अज़ाबों से बचना मुमकिन नहीं होगा क्योंकि क़यामत आने का मक़सद ही यही है कि वहाँ पैरोकारों को उन के हुक्म की पैरवी का फल और नाफ़रमानी करने वालों को उनकी नाफ़रमानी की सज़ा दी जाये।

[2] इसका एक मतलब तो यह है कि हर क़ौम में हम रसूल भेजते रहे, और जब रसूल अपना बाख़बर करने और पैग़ाम पहुँचाने का काम पूरा कर देता तो फिर हम उनके बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर देते, यानी पैग़म्बर और उन पर ईमान ले आने वालों को बचा लेते और दूसरों को बरबाद कर देते। क्योंकि :

﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا﴾

"हमारी रीत नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अज़ाब देने लगें।" (बनू इस्राईल : १५)

[3] यह मूर्तिपूजकों के अल्लाह के अज़ाब की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने ख़ुद के फ़ायदे और नुक़सान का हक़ नहीं रखता तो क्योंकर मैं दूसरों को फ़ायदा और नुक़सान पहुँचा सकूँ? हाँ, यह सारा हक़ अल्लाह ही के हाथ में है और वह अपनी मर्ज़ी से ही किसी को फ़ायदा

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿50﴾

५०. आप कह दीजिए कि यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब रात को आ पड़े या दिन को, तो अज़ाब में कौन सी ऐसी चीज़ है कि अपराधी लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿51﴾

५१. क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया जब कि तुम उसकी जल्दी मचा रहे थे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿52﴾

५२. फिर ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अब हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो, तुम को तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِىْ وَرَبِّىْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕۚ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿53﴾

५३. और वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (अज़ाब) वास्तविक बात है? आप कह दीजिए कि हाँ, क़सम है मेरे रब की कि वह वास्तविक (हक़ीक़ी) बात है और तुम (अल्लाह को) किसी तरह भी मजबूर नहीं कर सकते।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِى الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿54﴾

५४. और अगर हर जान जिस ने ज़ुल्म (शिर्क) किया है, के पास इतना हो कि सारी धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे, और जब अज़ाब देख लेगें तो लज्जा को छिपाये रखेंगे और उनका फ़ैसला इंसाफ़ के साथ होगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।

और नुक़सान पहुँचाने का फ़ैसला करता है, इसके सिवाय अल्लाह तआला ने हर उम्मत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर किया हुआ है, इस मुक़र्रर वक़्त तक मौक़ा देता है, लेकिन जब वह वक़्त आ जाता है तो फिर वह एक पल न पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं।

टिप्पणी : यहाँ यह बात बहुत ज़रूरी है कि जब सब से अच्छा मर्द रसूलों के सरदार मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ तक किसी को फ़ायेदा और नुक़सान पहुँचाने पर वश नहीं तो आप ﷺ के बाद के लोगों में कौन-सा इंसान ऐसा हो सकता है जो किसी की ज़रूरत को पूरा कर दे और मुसीबत दूर करने पर वश रखता हो? इस तरह ख़ुद अल्लाह के पैग़म्बर से मदद माँगना, उनसे दुआ करना "या रसूलुल्लाह अलमदद" और "أغثني يا رسول الله" आदि लफ़्ज़ों से पुकारना या ध्यान लगाना किसी भी तरह जायेज़ नहीं, क्योंकि यह क़ुरआन की इस आयत और इसी तरह की दूसरी वाज़ेह नसीहतों के ख़िलाफ़ है बल्कि यह शिर्क के दायरे में आता है।

५५. याद रखो कि जितनी चीज़ें आकाशों और ज़मीन में हैं, सभी अल्लाह की मिल्कियत में हैं, याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से लोग इल्म ही नहीं रखते।

أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿55﴾

५६. वही जान डालता है वही जान निकालता है और तुम सब उसी के पास लाये जाओगे।[1]

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿56﴾

५७. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी चीज़ आयी है जो नसीहत है[2] और दिलों में जो (रोग) है उन के लिए शिफ़ा है, और हिदायत करने वाला है और रहमत है ईमान वालों के लिए।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿57﴾

५८. आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए,[3] वह उस से कहीं ज़्यादा बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿58﴾

५९. आप कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी भेजी थी, फिर तुम ने उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हलाल कर लिया[4] आप पूछिए कि क्या तुम को अल्लाह ने हुक्म दिया था या अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۗ قُلْ آٰللّٰهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿59﴾

---

[1] इन आयतों में आकाश और धरती के बीच हर चीज़ पर अल्लाह तआला की मिल्कियत, अल्लाह के वादे का सच होना, जीवन-मृत्यु पर उसका हक़ और उस के दरबार में सब की हाज़िरी का बयान है, जिस से मक़सद पहले की बातों की तसदीक़ और ताईद है कि जो ताक़त इतने हक़ों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहां जा सकता है?

[2] यानी जो क़ुरआन को दिल लगा कर पढ़े और उसके मतलब और भाव पर ख़्याल करे, उसके लिये क़ुरआन नसीहत है, तालीम व नसीहत का अस्ल मतलब है पहले और बाद के नतीजा को याद दिलाना, चाहे डराने के ज़रिये हो या लालच के ज़रिये।

[3] ख़ुशी उस हालत का नाम है जो किसी प्यारी चीज़ के मिलने पर इंसान अपने दिल में महसूस करता है, ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह क़ुरआन अल्लाह की ख़ास रहमत और उसकी मेहरबानी है, इस पर ईमानवालों को ख़ुश होना चाहिए यानी उन के दिलों में ख़ुशी और आनन्द होना चाहिए, उसका मतलब यह नहीं है कि ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिये सभा और जुलूसों का, दीप जलाने का और इसी तरह के दूसरे बेकार और फ़ुज़ूल का काम करो, जैसाकि आजकल के बिदअती इस आयत से 'जश्ने ईद मीलाद' और इसकी ग़लत रस्म का जायेज़ होना साबित करते हैं।

[4] इस से मुराद वही कुछ जानवरों का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम पर छोड़ दिया करते थे, जिसका तफ़सीली बयान सूरः अल-अन्आम में गुज़र चुका है।

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿60﴾

६०. और जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क़यामत (प्रलय) के बारे में क्या ख़्याल है? हक़ीक़त में लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही एहसान है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿61﴾

६१. और आप किसी हालत में हों और इन हालतों में आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों और तुम लोग जो काम भी करते हो हम को सभी की ख़बर रहती है, जब तुम उस काम में मसरूफ़ रहते हो और आप के रब से कोई चीज़ तिनका बराबर छिपी नहीं, न धरती में न आकाश में और न कोई चीज उस से छोटी और न कोई बड़ी, लेकिन यह सब खुली किताब में है।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿62﴾

६२. याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर[1] न कोई डर है न वे दुखी होते हैं।

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿63﴾

६३. ये वे लोग हैं जो ईमान लाये और (गुनाह से) तक़वा बरतते हैं।

---

[1] नाफ़रमानों के बाद अल्लाह तआला अपने फ़रमाँबरदारों की चर्चा कर रहा है और वह है औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र)। 'औलिया' बहुवचन (जमा) है 'वली' कलिमा का जिसका लफ़्ज़ी माने 'क़रीबी' है। इस बुनियाद पर "औलिया अल्लाह" का मतलब होगा वे सच्चे और बेग़र्ज ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह के हुक्म की इताअत कर के और ग़लत कामों से बचकर अल्लाह की नज़दीकी हासिल कर ली, इसीलिये अल्लाह तआला ने ख़ुद अगली आयत में उनकी तारीफ़ इन लफ़्ज़ों में की है, "जो ईमान लाये और जिन्होंने अल्लाह का डर दिल में रखा" ईमान और अल्लाह का डर ही अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने की बुनियाद और अहम ज़रिया है। इस बिना पर हर अल्लाह का डर रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है, लोग वली होने के लिये करामत दिखाना ज़रूरी समझते हैं और फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे करामतों का प्रचार (तबलीग़) करते हैं, यह ख़्याल पूरी तरह ग़लत है, करामत और वली का न चोली-दामन का साथ है न इस के लिये ज़रूरी रुकावट। यह अलग बात है कि किसी से करामत ज़ाहिर हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इस में उस वली की मर्ज़ी शामिल नहीं है, लेकिन किसी अल्लाह से डर करने वाले मोमिन और सुन्नत की पैरवी करने वाले से करामत का इज़हार हो या न हो उस के वली होने में कोई शक नहीं।

६४. उनके लिए दुनियावी जिन्दगी में भी[1] और आख़िरत में भी ख़ुशख़बरी है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ बदलाव नहीं हुआ करता, यह बड़ी कामयाबी है।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿64﴾

६५. और आप को उनकी बातें दुख में न डालें, मुकम्मल ग़ल्वा अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۚ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿65﴾

६६. याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में है और जितने धरती में हैं यह सब अल्लाह के ही हैं, और जो लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं किस चीज़ की इत्तेबा कर रहे है, सिर्फ़ ख़्याली विचारों की इत्तेबा कर रहे हैं और सिर्फ़ अटकल वाली बातें कर रहे हैं।[2]

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۚ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿66﴾

६७. वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उस में आराम करो और दिन भी इस तरह से बनाया कि देखने भालने का ज़रिया है, बेशक इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿67﴾

६८. वे कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है, वह इस से पाक है, वह तो किसी का मुहताज नहीं, उसी की मिल्कियत है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, तुम्हारे पास इस पर कोई सुबूत नहीं, क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۗ هُوَ الْغَنِىُّ ۗ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۢ بِهٰذَا ۗ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿68﴾

---

[1] दुनिया में ख़ुशख़बरी से मुराद सवाब के काम हैं या वह ख़ुशख़बरी है जो मौत के वक़्त फ़रिश्ते एक ईमानवाले को देते हैं, जैसाकि क़ुरआन और हदीस से साबित है।

[2] यानी अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी दलील की बुनियाद पर नहीं, बल्कि एक अटकल पच्चू, राय और गुमान की देन है। आज अगर इंसान अपनी अक़्ल और समझ को सही तरीक़े से इस्तेमाल करे तो बेशक उस पर यह वाज़ेह हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं, और जिस तरह वह आकाश और धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में दूसरे उसके साझीदार किस तरह हो सकते हैं?

६९. (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण (इफ़्तरा) करते हैं वे कामयाब न होंगे।

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿69﴾

७०. (यह) दुनिया में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है, फिर हम उनको उन के कुफ़्र (अविश्वास) के बदले सख़्त सज़ा चखायेंगे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿70﴾

७१. और आप उन को नूह की ख़बर पढ़कर सुनाईए जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह के हुक्मों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह (तआला) ही पर भरोसा है, तुम अपनी योजना अपने साथियों के साथ मज़बूत कर लो, फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घुटन का सबब न होनी चाहिए, फिर मेरे साथ कर गुज़रो और मुझे मौक़ा न दो।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُم مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ ﴿71﴾

७२. फिर भी अगर तुम मुँह मोड़ते जाओ तो मैंने तुम से कोई बदला तो नहीं माँगा, मेरा बदला तो केवल अल्लाह (तआला) ही देगा और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ।[1]

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿72﴾

[1] हज़रत नूह के इस क़ौल से भी मालूम हुआ कि सभी नबियों का दीन इस्लाम ही रहा है, अगरचे दीनी नियम अलग-अलग और शरीअतें उनकी अलग रहीं। जैसाकि आयत सूर: अल-मायेद:, ४८ से वाज़ेह है ﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ लेकिन दीन सभी का इस्लाम था, देखिये सूर: अल-बक़र:-१३१, १३२, सूर: यूसुफ़-१०१, सूर: अन-नमल-९१, सूर: यूनुस-८४, सूर: अल-आराफ़-१२६, सूर: अन-नमल-४४, सूर: अल-मायेद:-४४,१११ और सूर: अल-अंआम-१६२ और १६३।

७३. तो वे लोग उनको झुठलाते रहे, फिर हम ने उनको और जो उन के साथ नाव में सवार थे उनको नजात अता की, और उनको वारिस बनाया[1] और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया, तो देखना चाहिए क्या नतीजा हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ فِى ٱلْفُلْكِ وَجَعَلْنَٰهُمْ خَلَٰٓئِفَ وَأَغْرَقْنَا ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُنذَرِينَ ﴿73﴾

७४. फिर उन (नूह) के बाद हम ने दूसरे रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वे उन के पास वाजेह सुबूत लेकर आये, पर जिस चीज को उन्होंने पहले वक़्त में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते[2] हम इसी तरह हद पार करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوا۟ بِمَا كَذَّبُوا۟ بِهِۦ مِن قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿74﴾

७५. फिर हम ने उन (पैग़म्बरों) के बाद मूसा और हारून को फ़िरऔन[3] और उस के प्रमुखों (सरदारों) के पास अपने चमत्कार देकर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे लोग मुजरिम क़ौम थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَٰرُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿75﴾

७६. फिर जब उनको हमारे पास से सच (सुबूत) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि बेशक यह खुला जादू है।[4]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿76﴾

[1] यानी धरती में उन बचने वालों को पहले के लोगों का वारिस बनाया, फिर इंसानों का आगामी वंश उन्हीं लोगों खास तौर से हज़रत नूह के तीन बेटों से चला, इसीलिये हज़रत नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

[2] लेकिन इन क़ौमों ने रसूलों की बात नही मानी, सिर्फ़ इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो फ़ौरन बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इंकार उनके लिये स्थाई (मुस्तक़िल) पर्दा बन गया, और वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको क़ुबूल करना क्यों? नतीजतन ईमान से महरूम रहे।

[3] रसूलों का सामान्य (आम) बयान करने के बाद हज़रत मूसा और हारून का बयान किया जा रहा है, अगरचे रसूलों के बीच वह भी आ जाते हैं, लेकिन उनकी गिनती अहम रसूलों में होती है, इसलिये ख़ास तौर से उनका अलग बयान किया।

[4] जब क़ुबूल न करने के लिये ठीक दलील या सुबूत नहीं मिलता तो उससे छुटकारा हासिल

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ﴿77﴾

७७. मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सच के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर कामयाब नहीं होते?

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ ﴿78﴾

७८. वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम को उस रास्ते से हटा दो जिस पर हम ने अपने बुज़ुर्गों को पाया है, और तुम दोनों को दुनिया में बड़ापन मिल जाये,[1] और हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿79﴾

७९. और फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी माहिर जादूगरों को लाओ।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿80﴾

८०. फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उन से कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले हो।

فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿81﴾

८१. तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है, तय बात है कि अल्लाह इस को अभी बरबाद किये देता है, अल्लाह ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।

وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿82﴾

८२. और अल्लाह तआला सच्चे सुबूत को अपने क़ौल से वाज़ेह कर देता है, चाहे मुजरिम को कितना ही बुरा लगे।

करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है।

[1] यह न मानने वालों की दूसरी गलत दलील है, जो सही दलील से आजिज होकर पेश करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) के रास्ते से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा और मुल्क हासिल है, उसे छीनकर ख़ुद क़ब्ज़ा करना चाहते हो, इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, यानी पूर्वजों की पैरवी और दुनियावी राज्य और मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा, उस के बाद आगे वही क़िस्सा है कि फ़िरऔन ने माहिर जादूगरों को बुलाया और हज़रत मूसा और जादूगरों का मुक़ाबला हुआ, जिस तरह सूर: आराफ़ में गुज़रा और सूर: ताहा में भी इसकी कुछ तफ़सील आयेगी।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۭ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ (83)

८३. फिर मूसा पर उनकी क़ौम वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये, वह भी फ़िरऔन और अपने सरदारों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये,[1] और हक़ीक़त में फ़िरऔन उस देश में ऊँचा (ताक़त वाला) था, और यह भी बात थी कि वह हद से बाहर हो गया था।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ (84)

८४. और मूसा ने कहा, हे मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम मुसलमान (आज्ञा-पालक) हो।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (85)

८५. तो उन्होंने कहा कि हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया, हे हमारे रब! हम को इन ज़ालिम क़ौम के लिए फ़ितना न बना।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (86)

८६. और हम को अपनी रहमत से इन काफ़िर लोगों से नजात अता कर।[2]

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (87)

८७. और हम नें मूसा और उन के भाई की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर क़ायम रखो, और तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह मुक़र्रर कर लो और पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ो और आप ईमानवालों को ख़ुशख़बरी दे दें।

---

[1] क़ुरआन करीम की यह तफ़सीर भी इस बात को बताती है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फ़िरऔन की क़ौम में से थे, क्योंकि उन्हीं को फ़िरऔन और उसके दरबारियों और सरदारों से तकलीफ़ पहुँचाये जाने का डर था, इस्राईल की औलाद वैसे फ़िरऔन की ग़ुलामी और अधीनता (मातहत) का अपमान (ज़िल्लत) एक लम्बे वक़्त से सहन कर रहे थे, लेकिन मूसा ﷺ पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध (तआल्लुक़) नहीं था, न उन्हें इस के सबब से ज़्यादा तकलीफ़ का डर था।

[2] अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरबार में दुआयें भी कीं, और अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है और सहारा भी।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَآ إِنَّكَ ءَاتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُۥ زِينَةً وَأَمْوَٰلًا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ رَبَّنَا لِيُضِلُّوا۟ عَن سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا ٱطْمِسْ عَلَىٰٓ أَمْوَٰلِهِمْ وَٱشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا۟ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ﴿88﴾

८८. और मूसा ने दुआ की, हे मेरे रब! तूने फ़िरऔन और उस के सरदारों को ज़ीनत और हर तरह के धन दुनियावी ज़िन्दगी में अता किये। हे हमारे रब! (इसलिए अता किये हैं) कि वे तेरे रास्ते से भटकावें। हे हमारे रब! उन के मालों को ध्वस्त (बरबाद) कर दे और उन के दिलों को सख़्त (कठोर) कर दे[1] ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी अज़ाबों को देख लें।

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَٱسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَآنِّ سَبِيلَ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿89﴾

८९. (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गयी तुम सीधे रास्ते पर रहो, और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो नादान है।

وَجَٰوَزْنَا بِبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱلْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُۥ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَدْرَكَهُ ٱلْغَرَقُ قَالَ ءَامَنتُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱلَّذِىٓ ءَامَنَتْ بِهِۦ بَنُوٓا۟ إِسْرَٰٓءِيلَ وَأَنَا۠ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ ﴿90﴾

९०. और हम ने ईस्राइल की औलाद को समुद्र से पार कर दिया, फिर उन के पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी सेना के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती के मक़सद से चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा[2] तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की औलाद ईमान लायी है, कोई उस के सिवाय इबादत के लायक़ नहीं और मैं मुसलमानों में से हूँ।

---

[1] जब मूसा ﷺ ने देखा कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर वाज व नसीहत का भी कोई असर नहीं हुआ, और इस तरह के मोजिज़े देखकर भी उन के अंदर कोई बदलाव नहीं आया तो फिर उनको शाप (बद्दुआ) दिया, जिसे अल्लाह तआला ने बयान किया है।

[2] यानी अल्लाह के हुक्म पर चमत्कारिक रूप (मोजिज़ाना तौर) से बने हुए पानी वाले रास्ते पर, जिस पर चलकर मूसा और उसकी क़ौम ने समुद्र पार किया था, फ़िरऔन और उसकी सेना भी समुद्र पार करने के इरादे से चलना शुरू किया, मक़सद यह था कि मूसा इस्राईल की औलाद को जो मेरी ग़ुलामी से आज़ाद कराने के मक़सद से रातों-रात ले आया, तो उसे दुबारा क़ैदी बना लिया जाये, जब फ़िरऔन और उसकी सेना उस समन्द्री रास्ते में दाख़िल हो गई तो अल्लाह ने समुद्र को पहले की तरह बहने का हुक्म दे दिया, नतीजतन फ़िरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿91﴾

९१. (जवाब दिया गया कि) अब ईमान लाता है? और पहले नाफ़रमानी करता रहा और फ़सादियों में शामिल रहा।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿92﴾

९२. तो आज हम तेरी लाश को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए निशाने इबरत हो जाये जो तेरे बाद हैं[1] और बेशक ज़्यादातर लोग हमारे निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿93﴾

९३. और हम ने इस्राईल की औलाद को बहुत अच्छा रहने का ठिकाना दिया और हम ने उन्हें मज़ेदार चीज़ें खाने के लिए अता कीं तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया यहां तक कि उन के पास इल्म पहुँच गया, तय बात है कि आप का रब उन के बीच क़यामत के दिन उन बातों में फ़ैसला कर देगा जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿94﴾

९४. फिर अगर आप उसकी तरफ़ से शक में हों जिसको हम ने आप की तरफ़ भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए जो आप से पहले की किताबों को पढ़ते हैं, बेशक आप के पास आप के रब की तरफ़ से सच्ची किताब आयी है, आप कभी भी शक करने वालों में से न हों।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿95﴾

९५. और न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झुठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿96﴾

९६. बेशक (नि:संदेह) जिन लोगों के बारे में आप के रब की बातें साबित हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

---

[1] जब फ़िरऔन डूब गया तो उसकी मौत का बहुत से लोगों को यक़ीन नहीं आता था, अल्लाह तआला ने समुद्र को हुक्म दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सब ने देखा, मशहूर है कि आज भी यह लाश मिस्र के अजायबघर में महफ़ूज़ है। والله أعلم بالصواب

९७. चाहे उसके पास सभी दलील पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी अज़ाब को न देख लें।

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿97﴾

९८. इसलिए कोई बस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उन के लिए फ़ायदेमंद होता, सिवाय यूनुस की क़ौम के,[1] जब वे ईमान ले आये तो हम ने अपमान (ज़िल्लत) का अज़ाब दुनियावी ज़िन्दगी में उन से हटा दी और उनको एक (निश्चित) वक़्त तक सुख भोगने (का मौक़ा) दिया।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿98﴾

९९. और अगर आप का रब चाहता तो सारी धरती के सभी लोग ईमान ले आते,[2] तो क्या आप लोगों को मजबूर कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें?

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۚ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿99﴾

१००. अगरचे किसी का ईमान लाना अल्लाह के हुक्म के बिना मुमकिन नहीं, और अल्लाह बेअक़्ल लोगों पर नापाकी थोप देता है।[3]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿100﴾

१०१. आप कह दीजिए कि तुम ख़्याल करो कि क्या-क्या चीज़ें आकाशों और धरती में हैं और जो लोग ईमान नहीं लाते उन को दलील और चेतावनी (तंबीह) कोई फ़ायेदा नहीं पहुँचाती।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿101﴾

---

[1] जिन बस्तियों को हम ने तबाह किया, उन में से कोई एक बस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये फ़ायदेमंद होता। हाँ, केवल यूनुस की क़ौम ऐसी हुई है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे अज़ाब दूर कर दिया।

[2] लेकिन अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है, जिसको पूरी तरह से वही जानता है, यह इसलिये फ़रमाया कि नबी करीम ﷺ की बड़ी ख़्वाहिश होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की मर्ज़ी जो ऊँची हिक्मत और बेहतरीन मसलिहत पर मबनी है, उसकी यह माँग नहीं, इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को ताक़त के ज़ोर ईमान लाने पर कैसे मजबूर कर सकते हैं? जबकि आप (ﷺ) के अन्दर न इसकी ताक़त है न उस के आप ज़िम्मेदार हैं।

[3] नापाकी से मुराद अज़ाब या कुफ़्र (अविश्वास) है, यानी जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त (मसरूफ़) रहते हैं और इस तरह अज़ाब के हक़दार हो जाते हैं।

فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ (102)

१०२. तो क्या वे लोग सिर्फ़ उन लोगों की सी घटनाओं का इंतेज़ार कर रहे हैं, जो उन से पहले गुज़र चुकी हैं, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम इंतेज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार करने वालों में से हूँ।

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ (103)

१०३. फिर हम अपने पैग़म्बरों को और ईमान-वालों को बचा लेते थे, इसी तरह हमारे हक़ में है कि हम ईमान वालों को नजात दिया करते हैं।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ (104)

१०४. (आप) कह दीजिए[1] कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक में हो तो मैं उन देवताओं की इबादत नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारी जान निकालता है, और मुझ को हुक्म हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (105)

१०५. और यह कि यकसू होकर अपना चेहरा इस दीन की तरफ़[2] कर लेना और कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ (106)

१०६. और अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज़ को न पुकारना जो तुझ को न कोई फ़ायेदा पहुँचा सके और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे।[3]

---

[1] इस आयत में अल्लाह तआला अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुक्म दे रहा है कि आप ﷺ लोगों पर वाज़ेह कर दें कि आप ﷺ का रास्ता और मूर्तिपूजकों के रास्ते एक-दूसरे से अलग हैं।

[2] हनीफ़ का मतलब है एकसू, यानी हर एक दीन छोड़कर केवल दीन इस्लाम क़ूबूल करना और हर तरफ़ से मुँह मोड़कर सिर्फ़ एक अल्लाह की तरफ़ यकसू होकर आकर्षित (मुतवज्जिह) होना सब से तोड़ना और अल्लाह से सम्बंध रखना।

[3] यानी अगर अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को फ़ायेदा और नुक़सान पहुँचाने की ताक़त नहीं रखते, तो यह ज़ुल्म होगा, ज़ुल्म का मतलब है किसी चीज़ को उस के असल जगह से हटाकर किसी दूसरी जगह पर रख देना, इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का हक़ है, जिस ने सारी कायनात को पैदा किया है और ज़िन्दगी के सभी वसायेल वही मुहैय्या करता है, तो इस इबादत के हक़दार ताक़त को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा-उपासना करना, ग़लत इस्तेमाल है, इसलिये शिर्क को बहुत बड़ा ज़ुल्म कहा गया है, यहाँ भी अगरचे ख़िताब नबी ﷺ को है, लेकिन हक़ीक़ी ख़िताब पूरी इंसानियत और मुसलमानों को है।

१०७. और अगर तुम को अल्लाह कोई दुख पहुँचाये तो सिवाय उस के कोई दूसरा उसको दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुम्हें कोई सुख पहुँचाना चाहे तो उस के फ़ज़्ल को कोई हटाने वाला नहीं, वह अपने फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहे निछावर कर दे और वह बड़ा बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿107﴾

१०८. (आप) कह दीजिए ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका है[1] इसलिए जो इंसान सीधे रास्ते पर आ जाये, तो वह अपने लिए सीधे रास्ते पर आयेगा, और जो इंसान रास्ते से भटक गया, तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा, और मैं तुम पर प्रभारी (निगराँ) नहीं बनाया गया।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿108﴾

१०९. और आप उसकी इत्तेबा करते रहिए जो कुछ वह्यी (आदेश) आप के पास भेजी जाती है, और सब्र कीजिये यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह सभी हाकिमों से बेहतर हाकिम है।

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّى يَحْكُمَ اللَّهُ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿109﴾

सूरतु हूद-११

سُورَةُ هُودٍ

सूर: हूद* मक्का में उतरी और इसकी एक सौ तेईस आयतें और दस रूकूअ हैं।

[1] हक़ से मुराद इस्लाम धर्म (दीन) और क़ुरआन है, जिस में अल्लाह के एक होने और मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

* इस सूर: में भी उन क़ौमों का बयान है जिन्होंने अल्लाह की निशानी और पैग़म्बरों को झुठलाया, जिस के सबब अल्लाह के अज़ाब का निशाना बने और तारीख़ के पृष्ठों (सफ़हों) से ग़लत लफ़्ज़ों की तरह मिटा दिये गये, या तारीख़ के पृष्ठों में नसीहत का नमूना बनकर मिसाल बनी हुई हैं। इसीलिए हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कि क्या बात है आप (ﷺ) बूढ़े से दिखायी देते हैं ? तो आप ﷺ ने जवाब दिया कि मुझे सूर: हूद, वाक़िआ, अम्मयतसाअलून और इज़ाअश्शम्सु कूवेरत वग़ैरह ने बूढ़ा कर दिया है। (तिर्मिज़ी नं॰ ३२९७, सहीह तिर्मिज़ी अलबानी ३।११३)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓرٰ‌ كِتٰبٌ اُحۡكِمَتۡ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَكِيۡمٍ خَبِيۡرٍۙ ﴿1﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें मजबूत की गयी हैं फिर मुफ़स्सल बयान की गयी हैं, एक हिक्मत वाले पूर्णज्ञान (ख़बीर) वाले की तरफ़ से।

اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ‌ؕ اِنَّنِىۡ لَـكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ وَّبَشِيۡرٌۙ ﴿2﴾

२. यह कि अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, मैं तुम को अल्लाह की तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ।

وَّاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُمَتِّعۡكُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤۡتِ كُلَّ ذِىۡ فَضۡلٍ فَضۡلَهٗ‌ؕ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ كَبِيۡرٍ ﴿3﴾

३. और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफ़ी कराओ, फिर उसी की तरफ़ ध्यानमग्न हो जाओ, वह तुम को मुक़र्रर वक़्त तक बेहतर सामान (ज़िन्दगी) देगा[1] और हर ज़्यादा अच्छे काम करने वाले को ज़्यादा फ़ज़्ल देगा, और अगर तुम लोग मुख मोड़ते रहे तो मुझ को तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब की फ़िक्र है।

اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ‌ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿4﴾

४. तुम को अल्लाह ही के पास जाना है और वह हर चीज पर पूरी क़ुदरत रखता है।

اَلَاۤ اِنَّهُمۡ يَثۡنُوۡنَ صُدُوۡرَهُمۡ لِيَسۡتَخۡفُوۡا مِنۡهُ‌ؕ اَلَا حِيۡنَ يَسۡتَغۡشُوۡنَ ثِيَابَهُمۡ ۙ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ‌ۚ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿5﴾

५. याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें। याद रखो कि वह लोग जिस वक़्त अपने कपड़े लपेटते हैं वह उस वक़्त भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं और जो कुछ साफ़ (बातें) करते हैं, बेशक वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

---

[1] यहाँ उस दुनियावी जरियों को जिसको क़ुरआन ने आम तौर से "घमंड का जरिया" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "बेहतर सामान ज़िन्दगी" कहा गया है, इसका मतलब यह हुआ कि जो आख़िरत से बेफ़िक्र होकर दुनियावी सुख से फ़ायेदा हासिल करेगा उस के लिए यह धोखे का साधन (जरिया) है।